SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-4, June- 2024
www.shikshasamvad.com

"आचार्य विष्णुकांत शास्त्रीजी का बहुआयामी व्यक्तित्व"

डॉ दिव्या सिन्हा

सहायक प्रोफेसर

शहीद प्रमोद बी.एड कॉलेज, मुजफ्फरपुर

प्रस्तावना :

कहा जाता है 'विद्या ददाति विनयम्' संस्कृत की यह उक्ति शास्त्रीजी के व्यक्तित्व को स्पष्ट करती है शास्त्रीजी हिन्दी के प्रख्यात विद्वान, प्रखर समालोचक, चिन्तक, सुप्रसिद्ध वक्ता, चिन्तक एवं कुशल प्राध्यापक आचार्य थे। किसी भी साहित्यकार के वयक्तित्व का उसके कर्तृत्व पर स्पष्ट प्रभाव दीखता है। शस्त्रीजी के प्रभावशाली व्यक्तित्व का प्रभाव भी अनके कर्तृत्व पर स्पष्ट दिखाई पड़ता है जो पाठक के मन को अनायास ही अपने आकर्षण मे ं बाँध लेता है। पाठक शास्त्रीजी के व्यक्तित्व पाश मे ं कुछ इस प्रकार बंध जाता है कि वह उसमे ं स्वेच्छा से ही बंधे रहना चाहता है।

(शास्त्रीजी का व्यक्तित्व बहुआयामी तथा रचना –संसार अत्यंत व्यापक है। हिन्दी की अनेक विधाओ ं निबंध, संस्मरण, कविता, यात्रावृत्त, रिपोर्ताज आदि के लखे ान मे ं शास्त्रीजी के कुशल लखे ान द्वारा शास्त्रीजी ने साहित्य की तमाम विधाओ ं को समृद्ध किया है। शास्त्रीजी का जुड़ाव आध्यात्म से भी रहा है। शस्त्रीजी की आध्यात्मिक पुस्तके की अमुल्य धरोहर है। यहाँ वे अपने अराध्य राम तथा अपने प्रिय कवि तुलसीदास से काफी प्रभावित दीखते हैं। शास्त्रीजी की कृतियाँ इस बात का प्रमाण है कि रचनाकार प्रारम्भ से ही विषयों के गहरे विवेचना मे ं सक्षम रहा है।

एक प्राध्यापक के रूप में भी शास्त्रीजी का जीवन अतयंत प्रेरणादायी रहा है। शास्त्रीजी साहित्य लखे ान के साथ – साथ देश की राजनीति मे ं भी सक्रिय रहे हैं, यहाँ भी उनकी छवी एक कर्मठ किन्तु बेदाग राजनीतिज्ञ के रूप में रही है।

शास्त्रीजी के प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं जीवन्त लखे ानी से मैं वर्षों से प्रभावित रही हूँ। शास्त्रीजी के बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कर्तृव्य ने ही मुझे शास्त्रीजी बारे में और अधिक जानने और उन पर शाधे ा कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। शास्त्रीजी ने जीवन के जिस क्षेत्र में भी पदार्पण किया उस ` अपने अलौकिक प्रकाश पूँज से आलोकित कर दिया। सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं साहित्यक इत्यादि सभी क्षेत्रो ं में अपनी विशिष्ट अपलब्धियो ं के बावजूद विष्णुकान्त जी की विनम्रता, सरलता, सहजता उनके व्यक्तित्व की अनूठी एवं विरल विशेषता है। शास्त्रीजी की भूमिका जे0पी0 आन्दोलन मे ं भी महत्वपूर्ण रही है।

2004 मे ं उत्तर प्रदेश के राज्यपाल पद से निवृत किए जाने तक शास्त्रीजी अनेक राजनैतिक संवैधानिक उच्च पदो ं को सम्हाल चुके हैं। इन पदो ं को सुशोभित करते हुए शास्त्रीजी की छवि हमेशा बेदाग रही है। राजनैतिक काजर की कोठरी मे ं भी शास्त्रीजी ने अपने स्वच्छा एवं गरिमामय व्यक्तत्व को सदैव सम्हाल कर रखा। जन्म–विवाह

आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री का जन्म 2 मई 1929 को कोलकाता मे ं अभिजात वैष्णव कुल में हुआ था। इनके पिता पंडित गागं ेय नरोत्तम शास्त्री हिन्दी जगत् के सुप्रतिष्ठित विद्वान और प्रख्यात कवि थे। इनकी माता का नाम श्रीमती रूपेश्वरी देवी था। शास्त्रीजी के पितामह काशी के सुप्रसिद्व विद्वान षड्दर्शनाचार्य पंडित कृष्ण दयालु शास्त्री थे। इनके दो बड़ े भाई एवं एक छोटे भाई थे। इनकी एकमात्र छोटी बहन मीरा देवी थी।

शास्त्रीजी का बाल्यकाल उनकी बड़ी नानी के संरक्षण में बीता जो शास्त्रीजी को 'तु मरी बुलबुल' कहकर बुलाती थी। शास्त्री परिवार जम्मू से काशी फिर कोलकाता आ कर बस गया था। शास्त्रीजी का जन्म कोलकाता मे ं ही हुआ था। विष्णुकान्त शास्त्रीजी का शुभ विवाह 26 जनवरी 1953 को में स्व0 पंडित अमरचन्द शर्मा की पुत्री कुमारी इंदिरा के साथ समपन्न हुआ था। श्रीमती शास्त्री अत्यंत धर्मनिष्ठा, आध्यात्म मे ं आस्था रखने वाली एवं सांस्कृतिक रूचि रखने वाली गृहणी थी। रामचरितमानस एवं श्रीमद्भागवत के प्रति उनकी निष्ठा विशेष थी। श्रीमती शास्त्री के इन विचारो ंका प्रभव शास्त्रीजी के व्यक्तित्व एवं साहित्य लखे ान पर अवश्य पड़ा होगा। 'तुलसी के हिय हेरी' कृति को अपनी धर्म पत्नी को समर्पित करते हुए

शास्त्रीजी ने लिखा है–

दिवंगत पत्नी सुदर्शना इंदिरा ,जिसने मुझे बनाने के प्रयास मे ं अपने को मिटा दिया।

शास्त्री दम्पति की एकमात्र संतान डॉ0 भारती शर्मा हैं, जो प्राध्यापिका रह चुकी हैं। जामाता श्री विनोद शर्मा इण्डियन ऑयल मे ं वरिष्ठ अधिकारी के रूप मे ं कार्यरत हैं। शास्त्रीजी की दो दौहित्रियँ कुमारी

विभा एवं ऋचा शर्मा हैं। शास्त्रीजी की धर्मपत्नी इंदिरा देवी का देहावसान 27 मई 1988 में कोलकाता में हुआ।

शिक्षा–दीक्षा

विष्णुकान्त शास्त्री अपने विद्यालय के मेधावी छात्र थे, इसलिए सभी अध्यापक एवं शिक्षक उनके प्रति विशेष स्नेह भाव रखते थे। शास्त्री जी शिक्षा कोलकाता मे ं ही हुई थी। अपने परिवार मे ं तीसरी पीढ़ी के लडका होने के कारण परिवार मे ं शास्त्रीजी तथा अनके भाइयो ं का लाड़–प्यार ज्यादा था। संभ्रान्त परिवार से संबद्व होने के कारण बचपन ऐशो–आराम मे ं ही बीता था। स्कूल दूर न होते हुए भी शास्त्रीजी मोटर से ही स्कूल जाते थे, साथ मे ं एक नौकर भी जाता था। इस संबंध मे ं शास्त्रीजी अपने एक संस्मरण में लिखते हैं 'अपने बचपन के बारे में सोचता हूँ तो लगता है कि संरक्षणशील, आस्तिक, सम्पन्न परिवार में बचपन बीतने के कारण वह सुखमय तो था किन्तु खतरा उठने की प्ररणा देने में असमर्थ भी था।'

शास्त्रीजी विद्यार्थी जीवन से ही लगनशील थे। बचपन मे ं न अधिक चंचल थे न आम बच्चों की ततह शरारती ही थे। पढ़ना–लखना शास्त्रीजी को शुरू से ही अच्छा लगता था। पढ़ाई के प्रति अपनी लगनशीलता तथा निष्ठा का उल्लेख करते हुए

शास्त्रीजी लिखते हैं–

''सीढ़ी के दरवाजे में कुंडी लगाकर माँ, नानी माँ ऊपर चली गई। उन लोगों के जाने के बाद में एक कुर्सी खींच लाया दरवाजे के पास। उस पर चढ़कर मैंने कुंडी खोली, अपना बस्ता लिया और पैदल गिरता पड़ता स्कूल चला गया। रोज हमारे साथ जाने वाल ` नौकर ने जब मुझे अकल ` पैदल आते आते देखा तो उसके होश उड़ गये। वह समझ गया कि घर मे ं मेरी खोजी हो रही होगी। स्कूल के जमादार को यह जिम्मेदारी देकर कि हमलोग कहीं बाहर नहीं निकल जाये, वह घर गया। मेरे सकुशल पहुँचने के समाचार से माँ, नानी माँ आदि को शांति मिली पर उस दिन घर लौटने पर मेरी कसकर पिटाई भी हुई। ..... पड़ोस के कुछ बच्चे ऐसे थे जो स्कूल नहीं जाना चाहते थे, अतः बीच–बीच में उनकी पिटाइ होती थी। बड़ी नानी माँ ने बाद मे ं कई बार कहा कि और बच्चे इसलिए पिटते हैं कि से स्कूल नहीं जाना चाहते, विष्णु बचारा इसलिए पिटा कि वह मना करने पर भी स्कूल चला गया था।''

घर मे ं शैक्षणिक तथा आध्यात्मिक माहौल होने के कारण शास्त्रीजी बचपन से ही संस्कृत के श्लाके ों का शुद्व उच्चारण करते थे। सात वर्ष की उम्र मे ं इनका यज्ञोपवित संस्कार हो गया, उसके बाद अपने पिता के आज्ञानुसार शास्त्रीजी नियमित संध्यावंदन करने लगे। 1945 मे ं सारस्वत क्षत्रिय विद्यालय कोलकाता से मैट्रीक एवं 1947 मे ं प्रेसिडेसी कॉलेज, कोलकता सं इंटरमीडियट (विज्ञान) की परीक्षाएँ प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। शास्त्रीजी के पिता चाहते थे कि वे वनस्पति–विज्ञानी बने किन्तु शास्त्रीजी की रूचि साहित्य के प्रति अधिक थी, विद्यासागर कॉलेज, कोलकाता से बी0 एससी0 करने के बाद

शास्त्रीजी ने विज्ञान की पढ़ाई छोडक़ र कोलकाता विश्वविद्यालय से हिन्दी विषय से एम0 ए0 करने लगे तथा इसी केक साथ ही एल0 एल0 बी0 की पढ़ाई भी चलती रही।

1953 मे ं शास्त्रीजी को एम0ए0 मे ं प्रथम श्रेणी मे ं स्वर्ण पदक के साथ ही एल0एल0बी0 की डीग्री भी प्राप्त हो गई। किन्तु शास्त्रीजी का संवेदनशील हृदय वकालत की अपेक्षा साहित्य की ओर झुक उपरान्त इसके गया। शास्त्रीजी कोलकता विश्वविद्यालय मे ं एक प्रध्यापक के रूप मे ं नियुक्त हुए। यह एक बड़ा संयाग ही था कि नियुक्ति के बाद ही उन्हे ं उपने समकक्ष एम0ए0 के छात्रो ं को पढ़ाने का अवसर मिला, जिसे उन्होने अपनी मेहनत तथा निष्ठा से सफलतापूर्वक पूर्ण किया। इस सन्दर्भ मे ं शास्त्रीजी का यह कथन द्रष्टव्य है–

"मैं सुबह से लके र रात तक पढ़ता ही रहता था। पिताजी मेरे कमरे के बगल वाल ं कमरे मे ं रहते थे। वे जब आये, देखें, विष्णु पढ़ रहा है। कक्षा लने ं गया और आकर फिर पढ़ने बैठ गया। मरे ं विभागध्यक्ष उस समय डॉ0 सत्येन्द्र थे। मरे ं पिताजी एक दिन उनसे मिले। उन्होनं ं उनसे कहा कि विष्णु बहुत बढ़ता है इतना पढ़ने से वह बीमार पड़ जायेगा, आप उसका मना कीजिये कि इतना न पढ़ो। डॉ0 सत्येन्द्र मेरी पीठ ठोकते हुए मुझसे कहा कि आज तक पचासो ं पिताओ ं ने मुझसे कहा कि मेरा बेटा पढ़ता नहीं, आप उससे कहिये ि कवह पढ़ा करे। पर आज पहली बार एक पिता ने कहा कि मरे ा बेटा पढ़ता है आप उसको मना कीजिये कि इतना न पढ़ो।

शास्त्रीजी का स्वभाव ही ऐसा था कि वे जिस काम को भी शुरू करते थे उसे पूर्ण मनोयागे से पूर्ण करते थे। शास्त्रीजी के प्रेरणा स्रोत

किसी भी व्यक्ति के विकास मे ं पहला एवं महत्वपूर्ण कारक उसका परिवारिक परिवेश होता है। शास्त्रीजी का जन्म एक अभिजात ब्रह्मण कुल में हुआ था, परिवार का माहौल ऐसा था कि उसमे ं आचरण, अध्यात्मिक, शद्धु ता का महत्व था। शास्त्रीजी के पिता स्वयं एक विद्वाव, सहृदय एवं कवित्व प्रतिभा से स हिन्दी साहित्य जगत से जिन लेखको ं कि कृतियो ं से अधिक प्रभावित थे उनकी चर्चा उन्होनं ं अपने संस्मरणो ं में किया है। तो वह दूसरो ं के गणू ों को भी उसी महानता से स्वीकार भी करता है। यही प्रवृति शास्त्रीजी मे ं भी दृष्टिगत होती है। अपने समकालीन या पूर्ववर्ती लाखे ाको ं तथा कवियो ं के गुणो ं ने भी शास्त्रीजी के व्यक्तित्व को विकसित किया इनमे ं शास्त्रीजी ने अपने संस्मरणो ं में जिन विद्वानो ं के गुणों का सहृदय से वर्णन किया है उनमे ं प्रमुख है–

हरिवश राय बच्चन, महादवे ी वर्मा, निराला, आचार्य, हजारी प्रसाद द्वीवेदी, अज्ञेय आदि के नाम उल्लेखनिय है। प्रसिद्ध आलोचक डॉ0 राम बिलास शर्मा को अपने गुरू तुल्य मानते थे हिन्दी के शीर्षस्थ समालोचक डॉ0 नामवर सिंह के साथ अपन ं सम्बन्धो ं के बारे में शास्त्रीजी लिखते है–

''नामवर जी से आरम्भिक औपचारिक परिचय, भावोष्ण विचार–विमर्श बल्कि वाद–विवादो ं के माध्यम से कब अन्तरंग आत्मियता में बदल गया, अपने तमाम विरोधों के वावजूद नहीं कह सकता। ऐसा हो कहा, इसका सबसे बड़ा कारण यह था कि विरोध वैचारिक स्तर पर था, वैयक्तिक स्वर्थों के धरातल पर नहीं

और हम दोनों एक दूसर` को स्वीकारते समय हृदय से अधिक जुड़` थे, इस अन्तर्निहित सहमति के साथ कि बुद्धि के स्तर पर अलग–अलग मतो ं का पोषण करने के लिए हम दोनों स्वतंत्र हैं। हम दोनों के लिए यह बंधुत्व प्रीतिकर और स्फमर्तिप्रद रहा है।"

शास्त्रीजी को बच्चन जी की अनेक कविताएँ कण्ठस्थ थी। बच्चन जी की सरलता, सहजता तथा जिन्दादिली से शास्त्रीजी काफी प्रभावित थे। बच्चन जी की रचनाओ ं की विवेचना करते हुए उन्होंने लिखा है–

"मानवीय प्रणय भावना का इतना सहज, इतना मांसल, इतना स्वस्थ, इतना प्रावधान, चित्रण हिन्दी मे ं विरल है। इन कविताओ ं को याद नहीं करना पड़ता, ये अपने आप या हो जाती हैं और फिर उपयुक्त अवसरो ं पर अकेले में या स्नेहियों के बीच इनकी आवृति करना रोमांचक, कितना आनंददायी अनुभव है। यह कैस` बताउँ।"

शास्त्रीजी के व्यक्तित्व निर्माण मे ं जिन व्यक्तियो ं का अविस्मरणीय योगदान है उन्हीं मे ं से एक नाम है कोलकता विश्वविद्यालय के प्रध्यापक प्रो0 कल्याणमल लाढ ा। जिन्होंने एक अध्यापक तथा प्रभावित किया। अपने निबंध संग्रह 'अनुचिंतन' को शास्त्रीजी ने अपने अग्रह के समान गुरू कल्याणमल लाढ ा को सादर समर्पित किया है।

शास्त्रीजी के आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक संस्कृतिक संस्कारो ं के विकास में उनके माता–पिता, बड़ी नानी माँ के विचारो ं तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि का बहुत प्रभाव था। शास्त्रीजी के चारित्रिक विकास मे ं उनके पल्लवन काल के वातावरण ने अनुकूलता प्रदान किया। इस संबंध में विष्णूकान्त शास्त्रीजी ने एक संस्मरण में लिखा हैः–

"मेरी बड़ी नानी माँ हमलोगो ं को बहुत प्रेम से कहानियाँ सुनाया करती थीं। रामायाण, महाभारत, पुराण आदि की कहानियाँ की जीवन्त विश्वकोश थी वे। ..... मुझे कहानियाँ सुनना बहुत ही अच्छा लगता था। मैं उन कहानियो ं मे ं खो जाता था। उनके चरित्रो ं के साथ अपने को जोड़ कर अपने उपयुक्त भूमिका की तलाश करने लगता था। कथा–था। धार्मिक संस्करो ं का शिलान्यास भी मेरे मन मे ं मुख्यतः नानीमाँ ने ही किया।"

विष्णुकान्त शास्त्रीजी ने अनेक मौलिक कृतियो ं का सृजन तो किया ही कई कृतियो ं का सम्पादन एवं अनुदान भी कियज्ञं मौलिक कृतियाँ हैं– कवि निराला की वेदना तथा अन्य निबंध, कुछ चंदन की कुछ कपूर की, बांग्लादेश के सन्दर्भ मे, चिन्तन मुद्रा, स्मरण को पाथेय बनने दो, अनुचिंतन, तुलसी के हिय हेरि, भक्ति और शरणागति, सुधियाँ उस चन्दन के वन की, ज्ञान और कर्म, अनन्त पथ के यात्री धर्मवीर भारती, जीवन पथ पर चलते–चलते, विष्णुकान्त शास्त्रीः चुनी हुई रचनाएँ, पर साथ–साथ चल रही याद, आधुनिक हिन्दी साहित्य के कुछ विशिष्ट पक्ष। उनकी तीन अनुदिय कृतियाँ है उपमा कालिदास (बंगला से हिन्दी में 'अनुदित') संकल्प, संत्रास, संकल्प (बंगलादेश की संग्रामी कविताओं) का बंगला से हिन्दी में अनुवाद, महात्मा गाध ं ी का समाज–दर्शन (अंग्रेजी से हिन्दी)। शास्त्रीजी द्वारा सम्पादित पुस्तके ं हैं–

बालमुकुन्द गुप्त : एक मूल्यांकन, दर्शक और आज का हिन्दी रंगमंच, बांग्लादेष संस्कृत और साहित्य, तुलसिदास : आधुनिक संदर्भ मे, कोलकता 1986, कोलकता 1993, अमर आग है (श्री अटल बिहारी वाजपेयी की कविताओ ं संकलन)। का साहित्य की अन्य विधाओ ं मे ं भी शास्त्रीजी ने अपनी लखे ानी को सफलतापूर्वक गति प्रदान किया है। बाग्लादशे ा के स्वतंत्रता संग्राम का आँखो ं देखा हाल का वर्णन उन्होनं ` रितोर्ताज शैली में किया है। यद्यपि हिन्दी साहित्य में रिपार्ताज एक समृद्ध विधा नहीं है। मुक्ति–संग्राम के दौरान धर्मवीर भारती के साथ शास्त्रीय ने दो बार बांग्लादेश की यात्रा की थी– एक बार मुक्ति संग्राम के दौड़ान और दूसरी बार बांग्लादेश के मुक्त हो जाने के बाद। लखे ाक ने अपनी इस यात्रा को 'अन्धकार मे ं ज्योति की तलाश' की संज्ञा दी है। पहली यात्रा के दौरान सनसनाते गाले ` के नीचे बिताए गए दिन को लेखक ने इन शब्दो ं मे ं व्यक्त किया है–"13 और 14 सितम्बर, 1971 की घटना को याद करता हूँ तो आज भी रोमांचित हो उठता हूँ। एक के बाद एक कितने ही दृश्य आँखो ं के सामने उभरने लगते हैं। बांग्लादेश के मंदमा रेलवे स्टेशन की उँची टेकरी मे ं बने प्रशस्त बंकर में कैप्टन पाशा के साथ हम सब लागे बैठ ` हुए है। कैप्टन दूरबीन लगाए दुश्मन की चौकियो ं पर नजर गडाए हुए हैं। मेरे हाथ मे ं दूरबीन देते हुए वे कहते हैं, 'देखिए उन झााड़ियो ं के बीच, जो छाजन सी दिखाई पड़ती है, वहीं दुश्मन की चौकी है। मैं उस पर अभी बमबारी करूंगा।

विष्णुकांत शास्त्रीजी ने जो कविताएँ लिखी हैं वे जटिल भाव बोध की नहीं बल्कि उल्लास और समर्पण की कविताएँ हैं। शास्त्रीजी पर दिनकर जी का अधिक मुखर दिखाई देता है। यद्यपि कि शास्त्रीजी के साहित्य का कविता पक्ष गौण ही है फिर भी उन्होनं ` जो भी कविताएँ लिखी वे अत्यंत संवेदनशील हैं। राष्ट्रीय भावनाओ ं में खिखी गई उनकी कविताएँ युवको ं को देश के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर देने की प्रेरणा देती है। यहाँ द्रष्टव्य है शास्त्रीजी की कविता का यह अश ं ा–

"जूझ काल से अमर हो गये जो बलिदान आजादी की नींव बनी जिनकी कुर्बानी उन्हीं मस्त सिंहों की फौलादी हिम्मत को, शत प्रणाम करती भारत की नयी जवानी।' शास्त्रीजी के साहित्य लखे ान की विधाओ ं में डायरी एवं पत्र का भी महत्वपूर्ण स्थान है। वे नियमित रूप से डायरी लिखा करते थे जिसे उन्होनं ` 'हीरे की खान' की संज्ञा दी है। यही बात उनके पत्र लखे ान के बारे में भी कहा जा सकता है। इन पत्रो ं में समाज तथा राष्ट्र के साथ ही व्यक्तिगत भावनाओ ं को भी स्थान दिया गया है। अपनी दार्जलिंग यात्रा के दौरान शास्त्रीजी ने अपनी प्रिय धर्मपत्नी को एक पत्र लिखा था, जो थोड़ ` परिवर्तन के साथ 'धर्मयुग' पत्रिका मे ं यात्रा–वृतांत के रूप मे ं छपा था। यहाँ प्रस्तुत है उस पत्र का कुछ अंश– "इस समय प्राकृतिक वातावरण इतना मोहक और सुन्दर है कि बरबस तुम्हारी या आ गई और याद आ गई मानस की चौपाई, 'धन घमंड गरजत नभ घोरा, प्रियाहीन डरपत मन मोरा।' तीन तरफ उचो ं हरे–भरे पहाड़, सामने दूर तक फैला हुआ जंगल (जिसके बीच से मैदानी इलाको ं की झलक भी मिल जाती है) बादलों से छाया हुआ आकाश, रिमझिम का मधुर संगीत, जिसमे ं तबल ` की थाप के सामन मेघगर्जन,

ठंडी–ठडी गदु गुदा देने वाली हवा और पूरे बंगल` मे ं अकेला मैं। किताबें (जिन्हे ं तुम अपना सौत समझती हो) जरूर साथ हैं, किन्त ु वे भला कितना सहारा दे सकती है।

राजनीतिक जीवन

आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री जून, 1975 ई0 मे ं जे0 पी0 आन्दोलन के माध्यम से राजनीति की राज पर अपना पहला कदम रखा। कोलकता मे ं 5 जून 1975 को जयप्रकाशजी के नेतृत्व मे ं ऐतिहासिक सभा हुई, जिसमे ंशास्त्रीजी भी सम्मलीत हुए थे। यहीं से शास्त्रीजी की राजनैतिक यात्रा शरु होती हैं। जे0पी0 का यह आन्दोलन आपालकाल के विरोध में था, शास्त्रीजी भी इस तानाशाही के विरोधी थे। इस तानाशाही का हर स्तर पर विरोध करना शास्त्रीजी का धर्म बनता था अतः यही आन्दोलन शास्त्रीजी के राजनीति मे ं प्रवेश करने का करण बना। शास्त्रीजी बचपन से ही राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़` हुए थे। श्रीमती इन्दीरा गाधं ी ने संघ पर भी प्रतिबंध लगा दिया। चोटि के अनेक नेताओ ं को कौद कर लिया गया। शास्त्रीजी को इस आन्दोलं न मे ं कैद तो नहीं किया गया उन पर कड़ी निगाह रखा जाने लगा। उन्हे ं द्वीतिय विश्व हिन्दी सम्मेलं न मे ं मौरिसस जाने कि अनुमति नहीं मिली। मार्च 1977 मे ं चुनाव हुआ। इस चुनाव मे ं जनता दल कि जित तथा कॉगेस्र की हार हई। नौ राज्यो ं(जिसमे ं कॉगेस्र को कड़ारी हार का सामना करना पड़ा था) मे ं विधानसभा भंग करके चुनाव कराने कि घोषणा हुई। इन नौ राज्यो ं में बंगाल भी एक था जहां से चुनाव लड़ने के लिए शास्त्रीजी को जन संघ की ओर से पेश किया गया। शास्त्रीजी न चाहते हुए भी चुनाव लड ं और जीत कर विधायक बने, इस प्रकार शास्त्रीजी सक्रिय राजनीति मे ं सीधे प्रवेश कर गय।

1982 मे ं अटल जी ने शास्त्रीजी को प्रदेश भाजपा का अन्तरिम काल के लिए अध्यक्ष नियुक्त कर दिया, इस पद पर वे 1986 तक बने रहे। अपने राजनौतिक जिवन मे ं उन्हे ं जहाँ कहीं चुनौतियो ं का सामना करना पड़ा व पिछे नहीं हटे। 1988 को शास्त्रीजी को भाजपा का राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोनित किया गया जिस पद पर वे 1993 तक रहे। इस पद पर रहते हुए ही 1992 को वे उत्तर प्रदेश से राजसभा के सांसद चुने गय। यह अवधि 6 वर्ष यानी 1998 तक रही इस 10 वर्ष की अवधि मे ं जो महत्वपूर्ण घटनाएं घटी और जिनमे ंशास्त्रीजी की सक्रिय भूमिका रही वो निम्नांकित हैं–

1989 मे ं भाजपा के अयोध्या आन्दोलं न से जुड़ने के साथ ही शास्त्रीजी भी स्वतः ही इससे जुड़ गय। 1989 मे ं राज शीला पूजन हुआ अयोध्या में राम मन्दिर का शिलान्यास हुआ, लाके सभा चुनाव हुआ जिसमे ं विश्वनाथ प्रताप सिंह प्रधानमंत्री चुने गये, 1990 मे ं अडवानी जी की रथ यात्रा निकली, सभी दलों द्वारा भाजपा और संघ परिवार की घेरेबन्दी का प्रयत्न किया गया, बंग्लादेश के साथ तिन विघा जमिन का हस्तांत्रन किया गया, इन सभी घटनाओ ं में शास्त्रीजी की महत्वपूर्ण भूमिका रही जो उनके राजनीतिक जीवन की सफलता को ही प्रदर्शित करती हैं।

हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के रूप में

राजनौतिक जीवन के अनेक उतार–चढ़ाव को पार करते हुए शास्त्रीजी का जीवन साहस और विद्वता का प्रतिक बनता गया। 2 दिसम्बर 1999 को शास्त्रीजी को हिमाचल प्रदेश का राज्यपाल नियुक्त किया गया। इस गौखमयी पद पर रहते हुए उन्होनं ` प्रदेश के विकास के लिए अनेक कार्य किय। यहां उन्होनं ` जिलों में अपनी सक्रिता बढ़ाकर प्रशासन को अधिक गतिशिल बनाया। मन्दिरो ं में भी पंडितों एवं पूजारियो ं के समुचित शिक्षण के लिए कदम उठाए। शास्त्रीजी स्वयं एक विद्वान व्यक्ति थे अतः वे शिक्षा के महत्व को भली–भांतिं जानते थे। विश्वविद्यालयों के कुलपति के रूप में शौक्षिक कैलेडं र को ठिक करना और हिन्दी को प्रत्येक स्तर पर प्रोत्साहित करना उनका महत्वपूर्ण कदम था। हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल के रूप में उनके कार्य को पत्रकार श्री वरूण सेन गुप्त के लखे ा से समझाा जा सकता है– '' शिमला मे ं हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल विश्णुकान्त शास्त्री ने अपार लाके प्रियता हासिल कि है। वहां का साधारण से साधारण व्यक्ति भी विष्णुकान्त जी की प्रशसं ा करने से नहीं चुकता, जिसका एक प्रमुख कारण यह है कि विष्णुकान्त जी लाइट सहाबों की तरह हरकत नहीं करके एक साधारण मनुष्य की तरह व्यवहार करते हैं।'' प्रदेश सर्वोच्च पद पर आसीन रहते हुए भी शास्त्रीजी ने अपनी सागदी, सरलता, सहजता तथा आम आदमी के प्रति अपनी आत्मीयता को सदैव बनाए रखा।

उत्तर प्रदेश के राज्यपाल के रूप में

नवम्बर 2000 मे ंशास्त्रीजी को उत्तर प्रदेश जैसे घनी आबादी वाल ` प्रदेश का राज्यपाल बनाया गया। यहाँ यह पद शास्त्रीजी के लिए काफी चुनौतीपूर्ण रहा। क्योकि उनके पूर्व के राज्यपाल ने कई ऐसे निर्णय लिए थे जिससे राजभवन विवादो ं के घेरे में आ गया था, शास्त्रीजी को राजभवन के उस गौख को पुनः स्थापित करना था। उत्तर प्रदेश के राजनीतिक उथल–पुथल के कारण शास्त्रीजी को वहाँ संवैधानिक मुखिया होने के साथ–साथ प्रत्यक्ष प्रशासन चलाने की जिम्मेदारी भी सम्हालनी पड़ी। उत्तर प्रदेश का राज्यपाल रहते हुए शास्त्रीजी का महत्वपूर्ण कार्य था– सर्वोच्च न्यायालय के आदेशों का अक्षरशः पालन करते हुए अयोध्या विश्व हिन्दू परिषद् के शिलादान कार्य कर्म को शांतिपूर्ण ढ़गं से सम्पन्न कराना।

अपने राजनीतिक जीवन में शास्त्रीजी को श्री अटल बिहारी वाजपेयी का स्नेह और सद्भाव सदैव प्राप्त हुआ। दोनों की आत्मीयता अपूर्व थी। शास्त्रीजी ने आडवाणी जी के गतिशील नेतृत्व से भी प्ररणा प्राप्त की।

शास्त्रीजी का साहित्यिक एवं राजनीतिक पक्ष जितना सबल है, उतना ही उनका आध्यात्मिक पक्ष भी प्रबल है। आध्यात्म के क्षेत्र में शास्त्रीजी रामभक्ति तथा राम के अनन्य भक्त तुलसिदास से काफी प्रभावित थे। तुलसिदास के नवधा भक्ति प्रति अधिक आकृष्ट थे। नवधा भक्ति के तीसरे सोपान 'स्मरण' को शास्त्रीजी ने इस प्रकार व्याख्यायित किया है–

"स्मरण .... नवधा भक्ति का तीसरा सोपान है। यह कहा जा सकता है कि प्रभु के नाम, रूप, लीला, गण आदि की चर्चा सुनते या करते समय उनकी स्मृति बनी रहे। फिर इसे स्वतंत्र स्थिति क्यो ंदी जाए?

सूक्ष्मता से विचार करने पर लगेगा कि उपर्युक्त दोनों साधन स्मरण की तुलना मे ं बहिरगं हैं। उनके लिए किसी अन्य व्यक्ति, उपकरण या स्थूल बाह्य क्रिया की आवश्यकता होती है। कई बार ऐसा भी होता है कि श्रवण, कीर्तन यांत्रिक रूप से होता रहता है और मन कहीं और रमा रहता है। इसलिए यह मानते हुए भी कि श्रवण कीर्तन मे ं स्मरण गौण रूप से बना रहता है, उसकी स्वतंत्रता और मुख्यता की दृष्टि से अंतरंग साधन के रूप में स्मरण की मान्यता उचित ही है। स्मरण कहते हैं, ऐसे हैं हमार ` प्रभु के रूप, गुण, लीला आदि इस प्रकार की स्मृति को। 'स्मरणम्स एवं विद्या गुण अनिर्वायता है मन के योग की इत्याद्याकारास्मृतिः। इसमें, 'यथाकथण्चिन्मनसा संबंध : स्मृतिरूच्यते' अर्थात् जिस किसी भी प्रकार मन का प्रभु से संबंध हो जाना ही स्मृति है। साधारण तौर पर एकान्त मे ं बैठकर अन्य किसी व्यक्ति या वस्तु पर निर्भर न रहकर मनोयागे पूर्ण प्रभु के नाम, रूप, लीला आदि का चिन्तन करने को स्मरण भक्ति करते हुए भी भीतर–भीतर प्रभु का स्मरण करता रह सकता है। "8 भारतीय साहित्य एवं आध्यात्म मे ं भक्ति के अनेक प्रकार बताएँ गय ` हैं। भक्त अनेक प्रकार या किसी एक प्रकार की भक्ति को अपनाकर अपने आराध्य या ईष्ट की सेवा मे ं लीन रहता है। भक्ति का एक ऐसा ही प्रकार है 'रागानुगा भक्ति'। शास्त्रीजी का 'रागानुगा भक्ति' विवेचन द्रष्टव्य है–

''श्री रूपगासे वामी पाद आदि का मत है कि ऐसा 'राग' तो भगवान् के नित्य परिकरों, श्रीराधा, ललिता, विशाखा, नन्द, यशादे ा, सुबल, छीदमा, पत्रक, चित्रक, सनक, सनन्दन आदि मे ं ही सम्भव है। अतः उनकी भक्ति को ही 'रागानुगा' भक्ति कहा जा सकता है। ऐसे भक्त अपने स्वभाव के अनुसार शान्त, दास्य, संख्य वात्सल्य या मधुर भाव के रसात्मक भक्तों की भावना चेष्टा, वाणी, रहनी आदि के निरन्तर अनुशीलन के द्वारा अपने आजीवन को तद्वत् ढालने की साधना करते रहते हैं। मूलतः रागात्मिकता–भक्ति संबंध भक्ति ही है; क्योकि उसमे ं प्रभु के साथ अंशाशी, दास–स्वामी, सखा सखा, माता–पिता और पुत्र या कान्त–कान्त के संबंध की स्वीकृति रहती हैं। फिर भी मधुर भाव को प्रधनता देने की दृष्टि से श्रीरूप गासे वामी ने रागात्मिका भक्ति की काम रूपा और संबंध रूपा दो श्रेणियाँ स्वीकार की है। यह स्मरण रखना चाहिए कि काम–रूपा से उनका तात्पर्य गोपियों की परम प्रेम–रूपा मधुर भक्ति से ही है।"

इस अध्याय के अन्तर्गत आचार्य विष्णुकान्त शास्त्री का साहित्यिक स्वरूप उभरकर सामन ` आया है। शास्त्रीजी अपनी अनवरत लखे ानी से साहित्य जगत को बहुत बड़ी सम्पदा प्रदान करते हैं, जिसका अध्ययन आग ` के अध्ययो ं में होगा।

सन्दर्भ

1. स्मरण को पाथेय बनने दो, विष्णुकान्त शास्त्री, पृ0 67.
2. वही, पृ0 06.
3. सुवियाँ उस चन्दन के वन की, विष्णुकान्त शास्त्री, पृ0 81.
4. स्मरण को पाथेय बनने दो, विष्णुकान्त शास्त्री, पृ0 67.

5. कोलकता 86/संपादक– विष्णुकान्त शास्त्री पृ0 104.
6. सम्पादक जुगलकिशारे जैथलिया, विष्णुकान्त शास्त्री चुनी हुई रचनाएँ, पृ0 179.
7. विष्णुकान्त शास्त्री चुनी हुई रचनाएँ खण्ड–2, सम्पादक– जुगलकिशारे जैथलिया, पृ0 153
8. भक्ति और शरणागति, विष्णुकान्त शास्त्री, लाके –भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2001, पृ0 53,
9. वही, पृ0 73–74.

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-04, June- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-June-2024/30

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ दिव्या सिन्हा

For publication of research paper title

"आचार्य विष्णुकांत शास्त्रीजी का बहुआयामी व्यक्तित्व"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-04, Month June, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com